THRU the BIBLE



याकूब का विवाह

प्रार्थना के साथ शुरुआत करें
पढ़ें: उत्पत्ति 29:1-30
सुनें: THRU the BIBLE: उत्पत्ति 29:1-30

प्रिय परमेश्वर,

जब हम आपके वचन का अध्ययन करते हैं, तो हमारी आँखें खोलें ताकि हम देख सकें कि हम किस तरह खुद को और दूसरों को धोखा देते हैं। हमें यह समझने में मदद करें कि हम जैसा बोएंगे, वैसा ही काटेंगे। हमें आपकी ताड़ना को स्वीकार करने की नम्रता और आपके सामने सच्चाई से चलने की बुद्धि प्रदान कीजिए।
आमीन।



जाने का समय

उत्पत्ति 29:1-30

अब तक **याकूब ने अपने जीवन में घमण्ड, चतुराई और छल के सहारे आगे बढ़ना सीखा था।** वह अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए किसी भी बेईमान तरीके का सहारा लेने से नहीं हिचकिचाता था, और उसे इस पर घमण्ड भी था। **परन्तु अब उसे वही काटना था जो उसने बोया था।** याकूब अब बेतेल छोड़ने के लिए तैयार था-वही स्थान जहाँ **उसने यीशु मसीह को स्वर्ग तक पहुँचने वाली सीढ़ी के रूप में दर्शन में देखा था।** उसने अपनी यात्रा फिर से आरम्भ की और कुछ समय बाद हारान पहुँच गया।

सबसे पहले उसने एक कुआँ देखा जिसके मुँह पर **एक पत्थर रखा हुआ था।** इस कुएँ का पानी इतना ज़रूरी था कि उसे पत्थर से ढककर सुरक्षित रखा जाता था। दिन में एक खास समय पर कुएँ के ऊपर से पत्थर हटा दिया जाता था और **फिर सब लोग अपनी भेड़ों को पानी पिलाते थे।** जब सबको ज़रूरत के हिसाब से पानी मिल जाता, तो कुएँ को बंद करने के लिए पत्थर को वापस उसकी जगह पर रख दिया जाता था।

जब याकूब वहाँ पहुँचा, तो पत्थर अपनी जगह पर ही था। **उसने सबसे पहले पूछा, "हम कहाँ हैं?" जब उन्होंने जवाब दिया, "हारान," तो उसने पूछा कि क्या कोई नाहोर के बेटे लाबान को जानता है। "हाँ, वह उसकी बेटी राहेल है, जो अपनी भेड़ों के साथ आ रही है।"**

जब वे बातें कर रहे थे, तभी राहेल अपने झुंड के साथ वहाँ पहुँची। याकूब ने जैसे ही उसे देखा, उसने **कुएँ पर रखा पत्थर हटाया और उसके झुंड को पानी पिलाया।** किसी ने उससे राहेल के झुंड को पानी पिलाने के लिए नहीं कहा था, फिर भी उसने ऐसा किया। याकूब ने अपनी ज़िंदगी के शुरुआती दौर में अपने नियम खुद बनाए थे। अब वह एक बहुत बड़ा सबक सीखने वाला था, और यह सबक उसे उसके मामा लाबान सिखाने वाले थे।



याकूब की बोई फसल काटने का समय

जब वह अपनी रिश्तेदार राहेल से मिलता है, तो उसे चूमता है और भावनाओं से भर जाता है **और खुशी के मारे रोने लगता है। याकूब उसके पिता का भांजा है, यानी रिबका का बेटा, जो उसके पिता की बहन थी।** जब लाबान ने यह अच्छी खबर सुनी, तो वह याकूब से मिलने के लिए बाहर भागा, उसे गले लगाया और चूमा, और उसे घर के अंदर ले आया। याकूब ने शायद रात के खाने पर उन्हें अपनी यात्रा के किस्से सुनाए होंगे **कैसे उसने अपने भाई को धोखा देकर** अपना जन्मसिद्ध अधिकार हासिल किया **और कैसे चालाकी से आशीर्वाद पाया।**

लाबान को अब यकीन हो गया था कि यह उसका भांजा है, और उसने कहा, **"तू मेरा रिश्तेदार है, इसलिए अंदर आ और इसे अपना ही घर समझ।"** फिर एक महीना बीत गया। दूर देश से आए भांजे के तौर पर, याकूब कोई काम नहीं कर रहा था। वह शायद राहेल के साथ भी समय बिता रहा था। एक सुबह, लाबान ने याकूब से कहा, **"सुन, मैं नहीं चाहता कि तू मेरे लिए बिना किसी फ़ायदे के काम करे, इसलिए चल समझौता करते हैं।" अब लाबान अपने भांजे के साथ व्यवहार करने वाला था।**

हम सीखते हैं कि लाबान की दो बेटियाँ थीं: बड़ी बेटी का नाम लिया था और छोटी का राहेल। **वह जानता था कि याकूब राहेल को पसंद करता है, क्योंकि वह सुंदर और प्यारी थी। लेकिन लिया वैसी नहीं थी।** जब लाबान ने याकूब से पूछा कि उसकी मज़दूरी क्या होनी चाहिए, तो याकूब ने कहा कि वह राहेल के लिए सात साल तक काम करने को तैयार है। लाबान ने यह सौदा मान लिया।

याकूब ने धोखे का दर्द महसूस किया

अतः याकूब ने राहेल के लिये सात वर्ष सेवा की; और वे उसको **राहेल की प्रीति के कारण थोड़े ही दिनों के बराबर जान पड़े"**(उत्पत्ति 29:20)। याकूब की ज़िंदगी के शुरुआती सालों में, किसी भी सुंदर या सम्मानजनक चीज़ की एकमात्र झलक राहेल के लिए उसका प्यार ही था। अब जब सात साल की मेहनत पूरी हो गई थी, तो याकूब राहेल से शादी करने के लिए बेताब था। इसलिए, लाबान ने सभी आदमियों को इकट्ठा किया और एक दावत दी। **और शाम को, लाबान अपनी बेटी लिया को याकूब के पास ले आया।** उन दिनों, शादी की रस्म में दुल्हन का चेहरा घूंघट से पूरी तरह ढका होता था, इसलिए उसे देखा नहीं जा सकता था। बेचारे याकूब को अगली सुबह तक पता ही नहीं चला कि वह किस लड़की से शादी कर रहा है। **और वह राहेल नहीं थी - वह लिया थी! याकूब गुस्से में लाबान के पास गया और पूछा, "तुमने मेरे साथ यह क्या किया है? मैंने राहेल के लिए तुम्हारी सेवा की थी। तुमने मुझे धोखा क्यों दिया?"**

लाबान ने उसकी आपत्ति को यह कहकर टाल कर दिया, **"हमारे यहाँ बड़े बच्चे से पहले छोटे बच्चे की शादी करने का रिवाज नहीं है।"** यह एक ऐसी शर्त थी जिसके बारे में बताना वह याकूब को भूल गया था।

जब याकूब को पता चला कि उसके साथ धोखा हुआ है, तो क्या उसे याद आया कि उसने भी कभी बड़े भाई का होने का नाटक किया था? उसे घर इसलिए छोड़ना पड़ा था क्योंकि उसने अपने पिता को धोखा दिया था। अब याकूब को लगा कि उसे छोटी बहन मिलेगी, लेकिन उसे बड़ी बहन मिल गई। बाज़ी पलट गई थी, और याकूब के लिए यह एक दुखद दिन था।

परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध निर्णय लेना

लेकिन लाबान **अपने लेन-देन में "उदार" बनना चाहता था, इसलिए उसने एक प्रस्ताव रखा:** सात साल और काम करो, और तुम्हें राहेल मिल जाएगी। इसका मतलब था कि याकूब की दो पत्नियाँ हो जाएँगी-एक ऐसा काम जो उसे नहीं करना चाहिए था। आगे चलकर उसे मुश्किलों का सामना करना पड़ने वाला था। **इसलिए याकूब ने सात साल और सेवा की और राहेल को अपनी पत्नी बना लिया।**

कुछ लोगों ने पूछा है: **"क्या परमेश्वर एक से ज़्यादा पत्नियाँ रखने को सही मानते हैं?"** नहीं, बाइबल में लिखी हर बात को परमेश्वर सही नहीं मानते। लेकिन बाइबल इतिहास की सच्चाई बताती है। **याकूब की दो पत्नियाँ थीं, और ऐसा इस तरह हुआ। याकूब के परिवार में बहुत परेशानियाँ आईं, और इन सबकी जड़ यही थी कि वह अपनी मनचाही चीज़ पाने के लिए अपने ही तरीके अपनाता** था।



> "याकूब अपनी चतुराई के भरोसे जीवन जीता था। वह घमण्डी और चालाक था, और धोखेबाज़ी में माहिर हो गया था परन्तु अब उसे वही काटना था जो उसने बोया था।"

परमेश्वर के अनन्त सत्य

उत्पत्ति 29 से हमारे लिए सीख

बोने और काटने का सिद्धांत:

- **सत्य:** इस कहानी का मुख्य सच यह है कि **"मनुष्य जो कुछ बोता है,** वही काटेगा ।" (गलातियों 6:7)। याकूब ने अपनी शुरुआती ज़िंदगी अपने पिता का आशीर्वाद और अपने भाई का जन्मसिद्ध अधिकार पाने के लिए धोखेबाज़ी और बेईमानी के तरीकों का इस्तेमाल करते हुए बिताई। क्योंकि उसने धोखा बोया था, इसलिए उसे धोखा ही मिला: उसके मामा लाबान ने उसे धोखा देकर राहेल के बजाय उसकी बड़ी बहन लियाह से शादी करवा दी। **परमेश्वर ने याकूब को धोखा मिलने का दर्द सहने दिया ताकि उसे सुधारा जा सके, जिससे उसने अपने पिछले पापों के बारे में सोचा। यह एक बुनियादी और हमेशा सच रहने वाली बात है जो सभी पीढ़ियों पर लागू होती है।**



- **नए नियम से संबंध: गलातियों 6:7 धोखा न खाओ, परमेश्वर उपहास में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा।"**



मनन के लिए प्रश्न

सवाल 1

बोने और काटने के बारे में सोचें: क्या मेरी ज़िंदगी में ऐसे कुछ पहलू हैं जहाँ मैंने अपने लक्ष्य पूरे करने के लिए बेईमानी के तरीकों का इस्तेमाल किया है या "अपनी मर्ज़ी से नियम बनाए हैं" - ठीक वैसे ही जैसे याकूब ने किया था? मेरी मौजूदा मुश्किलें क्या उन कामों का नतीजा हो सकती हैं जो मैंने पहले किए थे?

सवाल 2

व्यवहार बदलना: वह कौन-सी एक "चतुर" या धोखे वाली आदत है जिसे मुझे आज अंगीकार करके छोड़ देना चाहिए, ताकि मुझे कड़वी फसल न काटनी पड़े?

सवाल 3

ईमानदारी से खुद की जाँच: याकूब ने अपने पिता को धोखा दिया था, और लाबान ने उसे वही धोखा वापस दिखाया। पवित्र आत्मा से पूछें कि क्या कोई ऐसी बात है जिसमें आप अभी दूसरों को या खुद को धोखा दे रहे हैं। परमेश्वर के सामने ईमानदारी से चलने के लिए आप इस हफ़्ते क्या कदम उठा सकते हैं?

THRU the BIBLE

हमारे रिसोर्स का इस्तेमाल करें

THRU the BIBLE ऐप डाउनलोड करें और 200 से ज़्यादा भाषाओं में उपलब्ध ऑडियो बाइबल शिक्षाएँ सुनें।

Visit ttb.bible

हमारी वेबसाइट पर 'स्क्रिप्चर एंगेजमेंट' बुक सीरीज़ के और भी वॉल्यूम वाली इंटरैक्टिव डिजिटल फ्लिप बुक देखें।

Visit ttbsa.org